–साक्षात्कार–

तबला विषय को भी एक भातखण्डे जैसे उद्धारक की आवश्यकता है...

डॉ0 अमित कुमार वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
संगीत भवन, विश्वभारती विश्वविद्यालय,
शान्तिनिकेतन, पं0 बंगाल
E-mail: kr.amitverma@gmail.com

गिरीश चंद्र श्रीवास्तव संगीत जगत में एक जाना माना नाम है। तबला विषय के विकास व प्रचार–प्रसार के लिए आपने आजीवन अथक परिश्रम किया। तालमणि, संगीताचार्य, प्रयाग श्री, स्वर साधना रत्न, नाद साधक आदि सम्मानों से नवाजे गए गिरीश जी ने देश के अनेक बड़े नगरों के अतिरिक्त, इंग्लैण्ड, हालैण्ड, जर्मनी, बेल्जियम आदि देशों की सांगीतिक यात्राएं भी की है। साथ ही तबला वादन, तबला प्रवेशिका, ताल प्रभाकर, प्रश्नोत्तरी, ताल परिचय भाग– 1,2,3 एवं तालकोश जैसी पुस्तकों के लेखन से तबला विषय को समृद्ध किया है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संगीत विभाग से अवकाश प्राप्त गिरीश जी के चिंतनपूर्ण लेख संगीत पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते है।

तबला विषय की वर्तमान स्थिति व उसकी संस्थागत शिक्षा को वे किस नजरिये से देखते है, इस संबंध में उनसे लिए साक्षात्कार के मुख्य अंश प्रस्तुत है–

प्र0– *संगीत की संस्थागत शिक्षा में तबला विषय की शिक्षा के लिये जो प्रयास किये गये क्या वे पर्याप्त हैं, यदि नही तो उन्हें और अधिक उपयोगी व सार्थक बनाने के संबंध में क्या प्रयास किये जाने चाहिये ?*

उ0– ये हर्ष की बात है कि वर्तमान में संगीत की संस्थागत शिक्षा के अन्तर्गत गायन, सितार व नृत्य विषयों के साथ तबला विषय को भी मान्यता मिली है और उसका अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। किन्तु इसे तबले का दुर्भाग्य ही माना जायेगा कि आज भी बहुत से विद्यालयों व संस्थाओं में तबला विशेषज्ञ नही हैं और उनके स्थान पर तबला विषय की शिक्षा गायकों, वादको (तंत्र) व नर्तकों द्वारा दी जा रही है। जिन संस्थाओं में तबला विशेषज्ञ उपलब्ध है वहाँ तो स्थिति ठीक है, किन्तु जिन विद्यालयों आदि में तबला विशेषज्ञ मौजूद नही है, वहाँ स्थिति संतोषजनक नही है। इस सम्बन्ध में एक बात और महत्वपूर्ण यह है कि संगीत की अन्य विधाओं के विशेषज्ञ व संस्था के उच्च अधिकारी भी तबला विषय पढ़ाए जाने व तबले का अध्यापक नियुक्त किये जाने के प्रति उदासीन रहते हैं। फिर भी शिक्षण संस्थाओं में तबला विषय की शिक्षा के लिये जो प्रयास हुए है उसे तबले की प्रगति की एक कड़ी मान सकते है। साथ ही अब हमें एक जुट होकर इस बात पर विचार करना चाहिये कि तबला विषय में कैसे आकर्षण पैदा किया जाए कि अधिक से अधिक लोग इसकी ओर आकर्षित हो और इसके विकास में भागीदार बने।

प्र0– *कुछ लोगों की धारणा है कि तबला विषय अध्ययन की दृष्टि से बहुत सीमित है व इसके अध्ययन में शास्त्र व वैज्ञानिक विवेचन की आवश्यकता ही नही हैं इस सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ?*

उ0– यह हमारे तबला विषय के साथ विडम्बना रही है कि वह सैकड़ों वर्षो तक उन लोगों के हाथों में रहा, जो पढ़े–लिखे नही थे। जिस कारण उसका वैसा विकास नही हो पाया जैसा कि अन्य विषयों का हुआ। इन्हीं कारणों से तबला हमेशा छोटे नजरिये से देखा गया। लेकिन हमें इस बात पर गर्व करना चाहिये कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संगीत के सभी विषयों का विकास हुआ है लेकिन तबला विषय का सबसे ज्यादा विकास हुआ है। लोगों में इसके प्रति रूचि और जागरूकता बढ़ी है। इसकी गूढ़ता और वैज्ञानिकता को समझकर इसे उच्च कक्षाओं में पढ़ाया जा रहा है। इस विषय को परिष्कृत और परिमार्जित करने के लिये बड़े–बड़े सेमिनार हो रहे है, शोध कार्य हो रहे हैं। इसके बावजूद भी अगर कोई तबला विषय को अध्ययन की दृष्टि से सीमित मानता है और इसे संकुचित नज़रिये से देखता है, तो शायद उसे तबला विषय की गूढ़ता और वैज्ञानिकता के बारे में कुछ पता ही नही है।

प्र0– *वर्तमान में हमारी शिक्षा अर्थोन्मुखी होती जा रही है, जिसका प्रभाव संगीत पर भी पड़ा है। ऐसी स्थिति में तबले की शिक्षा के लिये उसके पाठ्यक्रम का क्या स्वरूप होना चाहिये कि विद्यार्थियों को अधिक से अधिक लाभ मिल सके और वो इसके माध्यम से जीविकोपार्जन कर सकें ?*

उ0– आज का युग 'अर्थ' का युग है। आज जो विषय जीविकोपार्जन नही कर सकता, उस पर कोई ध्यान नही देता। आज तबला विषय को ऐसा स्वरूप दिये जाने की आवश्यकता है, जिससे उसकी उपयोगिता बढ़े। आज तबले के अतिरिक्त अगर आप ढोलक, नाल, ड्रम आदि वाद्य बजा सकते है, तो आपकी योग्यता अन्य लोगों की तुलना में बढ़ जाती है। जिस कारण आप जीविकोपार्जन आसानी से कर सकते है। तबले के विद्यार्थी को भी तबले के साथ अन्य वाद्यों का ज्ञान व दूसरी सांगीतिक योग्यताएं भी अर्जित करनी चाहिये, तभी वह किसी संस्था, आर्केस्ट्रा या फिल्म संगीत के क्षेत्र में अधिक से अधिक उपयोगी सिद्ध हो पाएगा। लेकिन मूल प्रश्न यह है कि इस प्रकार का मल्टीयूटीलिटी का कलाकार बनाने के लिये तबले के शैक्षिक पाठ्यक्रमों में क्या सुधार किये जाने चाहिये? मैं समझता हूँ इस संबंध में सुझाव देना तो आसान है, पर उसे व्यवहारिक रूप से लागू करना काफी मुश्किल है। आज भी हमारे पास बहुत सीमित साधन है और आर्थिक सुदृढ़ता भी इतनी अधिक नही है कि इसे व्यावहारिक रूप प्रदान किया जा सके।

प्र0– *तबला विषय की पुस्तकों के प्रकाशन के संबंध में आप क्या टिप्पणी करना चाहेगें ?*

उ0– आज से सौ साल पहले तबला विषय पर पुस्तक लिखने वाले विद्वान नही थे। गायन के विद्वान या शिक्षक ही अपनी गायन की पुस्तक में ताल संबंधी एक अध्याय लिख देते थे। उस समय के तबला वादकों का शैक्षिक स्तर इतना ऊँचा नही था कि वो तबले पर कोई किताब लिख सके। लेकिन मेरा ये मानना है कि स्ततंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संगीत के किसी विषय का अगर बहुत विकास हुआ है, तो वह तबला विषय

है। जनता में इसके प्रति जागरूकता आई है। कलाकारों में भी इसको लेकर आकर्षण बढ़ा है और अच्छी पुस्तकें भी लिखी गई है कुछ पुस्तकें ऐसी भी लिखी गई है, जिनमें बहुत सी कमियां है। लेकिन मुझे संतोष इस बात का है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से तबले की पुस्तक प्रकाशन में उत्तरोत्तर प्रगति हुई है। डॉ.आबान.ई.मिस्त्री और डॉ. अरूण कुमार सेन जैसे विद्वानों की पुस्तकें पढ़कर तबला और ताल विषय की गहराई व विस्तारशीलता का अंदाजा लगाया जा सकता है। तबले के लेखन से सम्बन्धित जो कमियां, विसंगतियां और भ्रम है उनका निराकरण एक बड़े स्तर पर होना चाहिये। ताकि तबले के पाठकों व विद्यार्थियों को विषय का पारदर्शी व प्रमाणिक ज्ञान प्राप्त हो सकें। मैं समझता हूँ कि तबला जगत् को भी एक भातखण्डे जैसे उद्धारक की आवश्यकता है जो तबला लेखन के क्षेत्र में व्याप्त कमियों को मौलिक ढंग से हल करके सर्वमान्य मतों की स्थापना कर सके।

प्र0– *इण्टरनेट के माध्यम से दी जाने वाली तबले की शिक्षा को आप तबला जगत् के लिये कितना उपयोगी मानते है?*

उ0– आज इण्टरनेट के माध्यम से शिक्षा का प्रचार हो रहा है। ये हर्ष की बात है कि 21वीं सदीं में अन्य विषयों की तरह हमारा तबला विषय भी विकास कर रहा है। इससे एक बात यह स्पष्ट होती है कि समाज में तबला विषय की उपयोगिता व महत्व बढ़ा है। लोग इस विषय की ओर जागरूक हुए है। लेकिन विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या दूरस्थ षिक्षा या इण्टरनेट के माध्यम से संगीतज्ञ तैयार किये जा सकते है। इण्टरनेट के माध्यम से तबले का प्रचार–प्रसार हुआ व उसकी भव्यता प्रमाणित हुई है, किन्तु एक तबला वादक तैयार करने में दूरस्थ शिक्षा असक्षम है। इण्टरनेट के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा की एक सीमा है। हमें उसे अच्छी तरह रेखांकित कर लेना चाहिये। इण्टरनेट तबले से सम्बन्धित सूचना दे सकता है, तालीम नही।

प्र0– वर्तमान में संगीत के अन्य विषयों की तुलना में तबले के अध्यापक पदों की संख्या काफी कम है जबकि हर वर्ष यू.जी.सी. की नेट परीक्षा और पी–एच.डी. करके अनेकों विद्यार्थी निकल रहे है। उनका समायोजन कहाँ होगा? उनका भविष्य क्या होगा? क्या वो तबले की निर्धारित की गई उच्चतम् शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद भी भटकतें रहेगें ?

उ0– ये बात सच है कि तबला विषय में अध्यापक पदों की संख्या सीमित है और गायन के अध्यापक पदों की संख्या से काफी कम है जिस कारण प्रत्येक तबले का शिक्षार्थी अध्यापक तो नही बन सकता। अतः उन्हें केवल इस भरोसे नही रहना चाहिये कि नेट और पी–एच.डी. करके उन्हें किसी न किसी विद्यालय या संस्थान में नौकरी मिल जाएगी, बल्कि उन्हें रोजगार के अन्य विकल्प भी खोजने चाहिये। वो एक कुशल तबला संगतकार बन सकते है। अपना संगीत विद्यालय खोल सकते है, रिकार्डिंग स्टूडियों चला सकते है, आदि। इसके अलावा सरकार की भी कुछ ऐसी नीतियां है, जो बेरोजगारी को बढ़ावा दे रही है। पहले

रिटायरमेंट की उम्र 60 वर्ष थी, जिसे बढ़ाकर 62 कर दी गई। सरकार ये शायद इस विचार के तहत कर रही है कि 30–40 वर्ष अध्यापन कार्य कर चुके अध्यापक के अनुभवों का लाभ कुछ समय और उठाया जा सके। ये विचार तो अच्छा है, लेकिन इस दौरान जो बेरोजगार नवयुवकों की भीड़ बढ़ती जा रही है, उसका क्या होगा? उस भीड़ को कौन सम्भालेगा? लेकिन संगीत में जो बेरोजगारी है वो अभी अन्य विषयों की तुलना में कम है, अतः आने वाले भविष्य में स्थिति और न बिगड़े इसके लिये हमें अभी से रोजगार के नये विकल्प तलाशने होगें।